

---

## Shivatandavastotra by Ravana

---

श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम् रावणरचितम्

---

### Document Information

---

Text title : shivaTANDava stotra

File name : shivtAND.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc\_shiva

Author : Ravana

Transliterated by : Girish Beeharry and Sushil D. Sharma sushil at synopsis.com

Proofread by : Girish Beeharry and Sushil D. Sharma

Description-comments : Extended version with 17 verses

Latest update : February 16, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 3, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम् रावणरचितम्



॥ अथ रावणकृतशिवताण्डवस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।

ऽमडुमडुमडुमन्निनादवडुमर्वयं

यकार याण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्त्रिलिम्पिनर्जरी-

-विलोलवीथिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।

धगद्गद्गद्गज्जवलललाटपट्टपावके

किशोरयन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षाणं मम ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर

स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रभोदमानमानसे ।

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापटि

कवचिद्दिगम्बरे(कवचिच्छिदम्बरे) मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्क्षणागमिप्रभा

कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तद्विग्वधूमुषे ।

मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे

मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तुं भूतभर्तुरि ॥ ४ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलोपशेखर

प्रसूनमूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।

भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटक

श्रियै चिराय जायतां यकोरबन्धुशेखरः ॥ ५ ॥

ललाटयत्वरजवलद्भनञ्जयस्कुलिङ्गभा-

-निपीतपञ्चसायकं नमत्रिलिम्पनायकम् ।

सुधामयूपलेपया विराजमानशेषरं

महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्गुगद्गुगज्जवल-

ध्नञ्जयाडुतीकृतप्रयण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुयाग्रचित्रपत्रक-

-प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७ ॥

नवीनमेधमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्-

कुडूनिशीथिनीतमः प्रबन्धभद्गुगन्धरः ।

निलिम्पनिर्जरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्गुगन्धरः ॥ ८ ॥

प्रकुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-

-वलम्बिकाण्डकन्दलीरुचिप्रबद्गुगन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं ममच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अर्धवर्ष(अर्धवर्ष)सर्वमण्डुगलाकलाकदम्बमञ्जरी

रसप्रवाहमाधुरी विजृम्भणामधुप्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मभान्तकं

गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-

-द्विनिर्गमत्कमस्फुरत्करालभालव्यवाट् ।

धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमण्डुगल

ध्वनिकमप्रवर्तित प्रयण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्-

-गद्विष्ठरत्नलोष्ठयोः सुदृढिपक्षपक्षयोः ।

तृणारविन्दयक्षुषोः प्रजामलीमडेन्द्रयोः

समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्जरीनिकुञ्जकोटरे वसन्

विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वडन् ।

विमुक्तलोललोचनो ललामभालवक्रकः

शिवेति मन्त्रमुख्यरन् कटा सुष्पी भवाम्यलम् ॥ १३ ॥

निलिम्पनाथनागरीकटम्भमौलमल्लिका-

निगुम्कुनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकाभनोडरः ।

तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमलर्निशं

परश्रियः परं पदंतदङ्गजत्विषां ययः ॥ १४ ॥

प्रयण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रयारणी

मडाष्टसिद्धिकामिनीजनावलूतजल्पना ।

विमुक्तवामलोचनाविवालकालिकध्वनिः

शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥

छंदम् छि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं

पठ-स्मर-श्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसन्ततम् ।

डरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं

विमोडनं छि देडिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥ १६ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं

यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां

लक्ष्मीं सदैव सुमुष्णिं प्रददाति शम्भुः ॥ १७ ॥

॥ छति श्रीरावणरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णांम् ॥

The stotra is in panchachAmara Chanda, in which there are 16 varna-s per line, each line begins with a laghu and the laghu and guru varna-s alternate. So there are eight LG (laghu-guru) pairs, making up 16 syllables of each line. The last shloka is in Vasanta-tilakA metre. Some of the versions of the stotra carry 15-19 verses.

There are two additional verses seen in some version

नमामि पार्वतीपतिं नमामि जल्लवीपतिं

नमामि लक्तवत्सलं नमामि भावलोचनम् ।

नमामि यन्द्रशेखरं नमामि द्युःभमोचनं

तदीयपादपङ्कजं स्मराम्यलं नटेश्वरम् ॥ १६ ॥

रावणेन कृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।

पुत्रपौत्रादिकं सौख्यं लभते भोक्षमेव च ॥ १८ ॥

एति दशकन्धरविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं समाप्तम् ।


Also there are variations, for example, the last line of verse 12 is also chanted as

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं लजाम्यडम् ॥ १२ ॥ or in 13


विलोललोललोचनो instead of विमुक्तलोललोचनो

Both alternatives are correct and there is no need to document all kinds of variations seen in different prints.

---

——  
*Shivatandavastotra by Ravana*

pdf was typeset on February 3, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

